तूफ़ान में हिफ़ाज़त

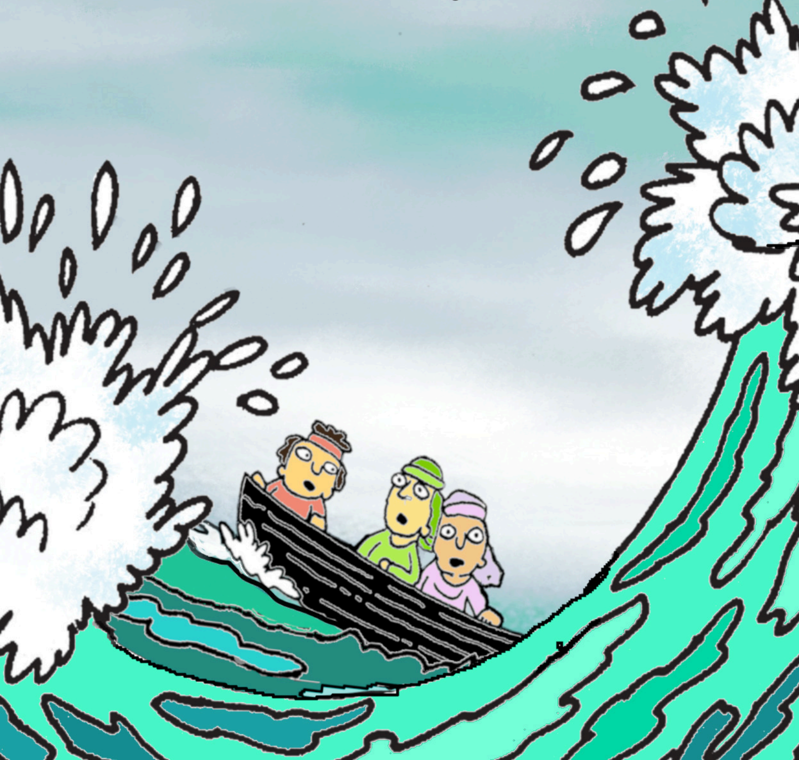

tūfān meṅ hifāzat

Safety in the Storm

by Bakhtullah

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org

published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of J. Kemp/R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-storm/; ditto
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-paul-shipwrecked/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

शफ़ा देने वाला 1

फ़रेब देनेवाली शांति 2

तूफ़ान में क्या करें? 3

हमें बचा 3

ईमान क्या है? 5

एक रिश्ता 6

ख़ौफ़ क्यों? 7

तूफ़ान में हमारा सहारा 8

जिसने ख़ुद दुख सहा है 9

मरक़ुस 4:35-41 10

ज्योंही ख़ुदावंद ईसा की ख़िदमत शुरू हुई वह भीड़ों से घिरा रहता था।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह बीमारों को शफ़ा देता था।

शफ़ा देने वाला

उसके कहने पर

अंधे देखते,

लँगड़े चलते-फिरते,

कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता,

बहरे सुनते

और मुरदों को ज़िंदा किया जाता था।

लेकिन इससे बढ़कर उसका किरदार लोगों को खींचता था। जब बोलता तो लोगों की आँखें फटी की फटी रह जातीं। वह महसूस करते थे कि यहाँ एक आम आदमी नहीं है। यों लोगों के ढेर हर वक़्त उसके आगे-पीछे पड़े रहते थे। वह उसे आराम करने तक भी नहीं देते थे।

एक दिन ख़ुदावंद ईसा तालीम देते देते बहुत थक गया। आख़िरकार उसने शागिर्दों से कहा, "आओ, हम झील के पार चलें।" वह कश्ती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द। उस्ताद चूर-चूर हो गया था। कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखकर वह गहरी नींद सो गया। शाम का वक़्त था। शागिर्दों में से कई कश्ती चलाने में माहिर थे। वह मज़बूती से कश्ती को खुले पानी की तरफ़ ले गए।

सबने इतमीनान की साँस ली : शुक्र है, दिन की गहमा-गहमी ख़त्म हो गई है। शुक्र है, अब कुछ सुकून मिल जाएगा।

शप शप। हलके हलके हिलकोरे कश्ती से आँख-मिचौली खेल रहे थे। मगर यह फ़रेब देनेवाली शांति थी।

फ़रेब देनेवाली शांति

रात के अंधेरे में अचानक चीख़ती-चिल्लाती एक चुड़ैल उन पर टूट पड़ी—एक ज़बरदस्त आँधी उन्हें झकझोरने लगी। यों जिस तरह बिल्ली चूहे को झकझोर झकझोरकर मार डालती है।

शागिर्द इस क़िस्म की आँधी जानते थे। यह कोई आम हवा नहीं थी। यह इर्दगिर्द के बड़े पहाड़ों में ज़ोर पकड़ते हुए बहुत नुक़सान पहुँचा सकती थी। पानी पर इसकी ज़द में आकर शायद ही कोई बच जाए।

पहले लहरों की शांत चपड़-चपड़, अब हाथियों की चिंघाड़ती भगदड़। मौजें उछल उछलकर कश्ती से टकराने लगीं। कश्ती कभी पानी के

पहाड़ पर चढ़ती और कभी चक्कर दिलानेवाली वादी में उतरती। उनके देखते देखते वह पानी से भरने लगी।

शागिर्द तो माहिर कश्तीबान थे। मगर तूफ़ान के ज़ोर के सामने उन्हें हथियार डालना पड़ा।

तूफ़ान में क्या करें?

► **अब क्या करें? क्या करें?**

यह सब कुछ इतनी तेज़ी से उन पर आन पड़ा था कि अब बचना ही मुश्किल था। वह पक्का समझ गए कि अब हम डूबने लगे हैं। अब मौत यक़ीनी है।

तब उनकी नज़र ख़ुदावंद ईसा पर पड़ी। यह कैसी बात थी! अब तक वह इतमीनान और आराम से सोया हुआ था। यों जैसे कुछ न हो रहा हो।

हमें बचा

शागिर्द लपककर उसे झँझोड़ने लगे। वह परेशानी से चीख़ उठे, “उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं? हमें बचा!”

वह अपने हवास बिलकुल खो बैठे थे। इस तरह अपने अज़ीम उस्ताद से बात करना तो बहुत बुरी बात है।

► **क्या यह कहना मुनासिब था कि आपको परवा नहीं?**

नहीं, यह बहुत ग़लत बात है। ख़ुदावंद की हर इनसान से मुहब्बत होती है। बल्कि अजीब बात यह है कि जितना छोटा और नाचीज़ कोई हो उतना ही ज़्यादा वह उससे प्यार करता है।

► **तो क्या हम भी उसकी मुहब्बत में शामिल हैं?**

ज़रूर!

तो भी शागिर्दों ने एक बात सही की।

► **वह क्या थी?**

वह मदद के लिए ख़ुदावंद ईसा के पास आए। वह जानते थे कि वही हमें इस ख़तरे से बचा सकता है।

अब आओ हम उस्ताद पर ध्यान दें।

► **क्या वह हालात देखकर घबरा गया? क्या उसका रंग माँद पड़ गया? क्या वह काँपने लगा?**

बिलकुल नहीं। उसने गरजकर आँधी को डाँटा और झील से कहा, “ख़ामोश! चुप कर!”

जब मालिक अपने कुत्ते को डाँटता है तो वह दुम दबाकर चुप हो जाता है। जब ख़ुदावंद ईसा तूफ़ान को डाँटता है तो वह भी चुप हो जाता है। आँधी एकदम थम गई। लहरें ख़त्म हो गईं। हिलकोरे दुबारा कश्ती से खेलने लगे। शागिर्दों की आँखें फटी की फटी रह गईं। सब कुछ बुरे ख़ाब की तरह लग रहा था।

तब उस्ताद ने अफ़सोस से शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?”

ईमान क्या है?

इस जगह पर मुनासिब है कि हम एक सवाल पूछें :

► **ईमान है क्या?**

शागिर्द तो ख़ुदावंद ईसा के बारे में बहुत कुछ जानते थे। वह उसके बहुत मोजिज़े देख चुके थे। और आख़िर वह उसके शागिर्द ही बन चुके थे। वह दिन-रात उसके साथ रहते, उसके साथ चलते, उसकी मदद करते थे। तो भी उनका ईमान तूफ़ान में कमज़ोर निकला।

देखो, ईमान तराज़ू से नापा नहीं जा सकता। कौन कह सकता है कि अब मैंने 10 किलो ईमान ख़रीद लिया है, अब मेरा ईमान मज़बूत है। दूसरे को सिर्फ़ 1 किलो ईमान मिल गया, उसका ईमान कुछ भी नहीं है।

ऐसा भी नहीं है कि ईमान इल्म रखने के बराबर हो। हो सकता है हमें बहुत इल्म हो पर ईमान न हो। हो सकता है हम ख़ुदा के बारे में इल्म रखें मगर उस पर ईमान न रखें।

► **तो फिर ईमान क्या है?**

ईमान एक ताल्लुक़, एक रिश्ता है।

एक रिश्ता

एक अच्छे घर के लोग एक दूसरे पर भरोसा कर सकते हैं। उन्हें यक़ीन है कि दूसरे मेरी भलाई चाहते हैं, दूसरे वफ़ादार रहेंगे।

► **क्यों?**

इसलिए कि उनका एक दूसरे पर ईमान है। उनका एक दूसरे से न सिर्फ़ ख़ून का बल्कि मुहब्बत का रिश्ता है।

ख़ुदा पर ईमान का यही मतलब है। यह नहीं कि हम कहें कि अल्लाहु अकबर। बेशक यह सच है। यह भी सच है कि वह ख़ालिक़ है, कि सब कुछ उसकी मरज़ी पर चलता है। मगर यह सिर्फ़ इल्म है। ईमान यह है कि मैं अपनी ज़िंदगी उसके सुपुर्द कर दूँ। कि मैं महसूस करूँ कि हर क़दम उसी के हुज़ूर चल रहा हूँ।

ख़ुदावंद ईसा फ़रमाता है कि क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?

► **इसका क्या मतलब है?**

मतलब यह है कि तुम मेरे पीछे हो लिए हो। मेरी तालीम पाते, मेरे साथ चलते रहे हो। तुम मुझ पर भरोसा करते आए हो। रिश्ते का जो बीज मैंने तुममें डाल दिया वह उग आया है। क्या रिश्ते का यह पौधा अब तक इतना नाज़ुक है? कमाल है, हवा के एक झोंके से उसका सत्यानास हो गया है। तुम नहीं समझे कि मैं हर हालत में तुम्हारे साथ हूँ, तूफ़ान में भी।

शागिर्दों पर ख़ौफ़ तारी हुआ। वह एक दूसरे से कहने लगे, "आख़िर यह कौन है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।"

► **ख़ौफ़ उन पर क्यों छा गया?**

ख़ौफ़ क्यों?

ख़ुदावंद ईसा आँधी और मौजों को डाँटता है। डाँटने का मतलब है गरजकर उनको रोकना। यों जिस तरह हम सख़्ती से बच्चों को कहते हैं, "चुप! ख़ामोश!"

यही कुछ देखकर शागिर्द सख़्त डर गए। यह आँधी से डर जैसा नहीं था। यह वह ख़ौफ़ है जो इनसान महसूस करता है जब उस पर ख़ुदा की क़ुदरत ज़ाहिर होती है। जब वह महसूस करता है कि यहाँ एक इलाही ताक़त है। इसके सामने मैं खड़े होने लायक़ नहीं हूँ। इसलिए वह पूछते हैं कि "आख़िर यह कौन है?"

शागिर्द जानते थे कि तौरेत और ज़बूर के मुताबिक़ ख़ालिक़ यही कुछ करता है। एक ज़बूर फ़रमाता है,

> तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ,
> तेरी गरजती आवाज़ सुनकर वह एकदम भाग गया।
> तब पहाड़ ऊँचे हुए
> और वादियाँ उन जगहों पर उतर आईं
> जो तूने उनके लिए मुक़र्रर की थीं। (ज़बूर 104:7-8)

ख़ालिक़ ने पानी को डाँटा तो वह अपनी जगह पर आ गया। उसने एक हद बाँधी जिससे आगे पानी बढ़ नहीं सकता। शागिर्दों ने कश्ती में देखा कि ख़ुदावंद ईसा, ख़ालिक़ का काम कर रहा है। वह भी गरजकर पानी के ढेरों को चुप कराता है और वह एकदम थम जाते हैं।

तूफ़ान में हमारा सहारा

हम सभों का पाला ऐसे तूफ़ानों से पड़ता है। ज़िंदगी में एकदम आँधी हम पर टूट पड़ती है। एकदम पानी के पहाड़ हमें सख़्त झटके देते हैं। हम डूबने लगते हैं। हम सहारे के लिए चारों तरफ़ देखते और चीख़ते-चिल्लाते हैं। बहुत बार हमारे दोस्त और घरवाले भी जवाब देते हैं।

► **तब कौन हमारा सहारा रहेगा?**

एक है जो मेरी और आपकी आवाज़ हमेशा सुनता है—ख़ुदावंद ईसा। वही तूफ़ानी लहरों को डाँट सकता है। कह सकता है कि चुप! ख़ामोश!

कभी कभी ख़ुदा की मरज़ी है कि हम इस दुनिया को छोड़ अगली दुनिया में चले जाएँ। उस वक़्त भी अगर हम पुकारें वह हमारी सुनता है। हमें अपने बाँहों में लपेट हिफ़ाज़त से वहाँ तक पहुँचा सकता है। उस पर भरोसा करो। शागिर्दों की तरह डाँवाँडोल न बनो।

जिसने ख़ुद दुख सहा है

कितनी अज़ीम बात। जब ज़िंदगी और मौत की तूफ़ानी लहरें हमें झकझोरती हैं तो हम उसे पुकार सकते हैं। उसे जो ख़ुद दुख जानता है। ख़ुद उस ने सलीब पर दुख उठाया है। जिसके सर पर काँटेदार ताज ठोंका गया वह हमारा दुख और तकलीफ़ जानता है। वह उसे ख़ुद महसूस करता है। अपने आपको उसके हाथ में सौंप दें। तब ही हम हिफ़ाज़त से पार के किनारे तक पहुँच जाएँगे।

मरक़ुस 4:35-41

उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार चलें।” चुनाँचे वह भीड़ को रुख़सत करके उसे लेकर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं। अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती से टकराकर उसे पानी से भरने लगीं, लेकिन ईसा अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर कहा, “उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “ख़ामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?”

उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आख़िर यह कौन है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”